बिगड़ रही जैव विविधता

राष्ट्रीय सहारा 27/2/16

देहरादून। जलवायु परिवर्तन एवं कार्बन न्यूनीकरण पर एफआरआई में आयोजित कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। इस मौके पर वरिष्ठ विज्ञानी डा. पीके मैथानी ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचने के लिए जरूरी है कि जीवाश्म ऊर्जा का उपभोग कम हो। केंद्र सरकार की गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोत से संबंधित योजनाओं का जिक्र कर उन्होंने कहा कि वर्ष 2035 तक 40 प्रतिशत ऊर्जा गैर पारंपरिक स्रोतों से पैदा की जाएगी। ब्यूरो

Rastriya Sahara 27-02-16

दून दर्पण 27/2/16

दीमक नियंत्रण तथा काष्ठ परिरक्षण पर सर्टिफिकेट प्रशिक्षण कार्यक्रम

देहरादून २६ फरवरी (**दर्पण संवाददाता**) । पेस्ट मैनेजमेंट एसोसिए न (एक राष्ट्रीय संस्था) तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय दीमक नियंत्रण तथा काष्ठ परिरक्षण पर सर्टिफिकेट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है जो २७ फरवरी तक चलेगा,जिसका उददेश्य कीट प्रबंधन के पेशेवरों, काष्ठ से सम्बन्ध रखने वाले औद्योगिक ईकाईयों व कष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, एफआरआई (सम) विश्वविद्यालय के छात्रों को दीमक के नियंत्रण तथा काष्ठ परिरक्षण के बारे में आधुनिक तथा विकसित ज्ञान से अवगत कराना है। साथ ही भौक्षणिक संस्थानों तथा इंडस्ट्री के बीच भागीदारी की दिशा में एक ऐसा मार्ग विकसित करना है जिसमें पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कीटनाशी अभियानों को सुरक्षा मानको में सुधार और काश्ठ उद्योग की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए प्रशिक्षित छात्रों तथा काष्ठ उद्योग से जुडे हुए लोगों में प्रशिक्षण का उद्घाटन वन अनुसंधान संस्थान के मुख्य भवन के दीक्षान्तगृह में डा. अनमोल कुमार, भावसें , महानिदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण ने दीप प्रज्वलित कर किया।

उन्होने वन अनुसंधान संस्थान तथा पीएमए के संयुक्त प्रयास की सराहना की तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में पेस्ट मैनेजमेंट के लिये वैज्ञानिक व पेशेवर तकनीक का उपयोग करने पर जोर दिया। डा. सविता निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान ने दीमकों के ज्ञान व नियंत्रण में संस्थान के वन कीट प्रभाग के अनुभव व विशेषता के बारे में बताया। उन्होने यह भी बताया कि इस क्षेत्र में अग्रणी कार्य इसी संस्थान से हुआ है।

उन्होंने कहा कि वन कीट विज्ञान प्रभाग वन अनुसंधान संस्थान का एक मुख्य प्रभाग है जिसमें कीटों के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। अपनी स्थापना के समय से ही वन कीट विज्ञान प्रभाग ने भारत में दीमक तथा उसके नियंत्रण पर किए गए कार्यों में विशेष योगदान दिया है। उन्होने यह भी बताया कि राष्ट्रीय वन कीट संग्रह वन कीट विज्ञान प्रभाग में भारत में वन्य कीटों पर सबसे बडा संग्रह है।

उन्होंने कहा कि इस संग्रह में लगभग तीन लाख कीट नमूने परिरक्षित है जिनमें लगभग १८ हजार प्रमाणिक रूप से विशेषज्ञों द्वारा पहचान की गई कीट प्रजातियों के नमूने हैं। इनमें से लगभग १९०० मूल टाईप नमूने है। इसी वन कीट संग्रह में दीमक की भी लगभग ८५५ प्रजातियों के नमूने संग्रहित है। इस राष्ट्रीय वन कीट संग्रह को पूरी तरीके से डिजिटल कर दिया गया है और सभी प्रजातियों के बारे में विस्तृत जानकारियां डेटा बेस में उपलब्ध है।

उन्होने दावा किया कि वन कीट विज्ञान संग्रहालय भी लगभग तीन हजार प्रर्दशनीय नमूनों से सुसज्जित एक अनूठा संग्रह है जिसमें कीडों के साथ साथ उनके द्वारा क्षतिग्रस्त काष्ठ के नमूनों को रखा गया है। इसी वन कीट विज्ञान संग्रहालय मे दीमक रानी का मॉडल तथा दीमक का टीला भी दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।

उन्होंने कहा कि इस संग्रहालय में प्रकृतिविदों, शोधकर्ताओं और प्रशिक्षणार्थियों के लिए देखने सीखने और समझने का बडा श्रोत है। आज का प्रशिक्षण कार्यक्रम दीमक नियंत्रण तथा काश्ठ परिरक्षण पर बहुत ही उपयोगी कार्यक्रम है तथा इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने की सतत आवश्यकता है। इस अवसर पर अन्य ने विचार व्यक्त किये।

Doon Darpan 27-02-16

The Pioneer 27/2/16

Timely action vital for termite mgmt

PNS ■ DEHRADUN

Necessary action should be taken on noticing the first signs like a mud tube to prevent termites from causing damage and destruction. Timely action is essential for termite management in India which 340 of the 4,000 termite species recorded on the globe. This was stated at the start of training programme on termite management and wood preservation organised jointly by the Forest Research Institute and Pest Management Association.

Speaking on the occasion delivering the inaugural address, FRI forest entomology division scientist M Yousuf said that everybody is well aware of termites, as the pests of furniture, books and households. He further added that about 4,000 termite species have been recorded the world over, of which 340 species have been described from India.Termites may attack trees with low resistance but generally ignore fast-growing plants. Termites start to move from ground forming mud tubes. They attack furniture, doors, fixtures, documents, clothes and even currency notes. He cautioned that when you notice a mud tube, have a quick look that millions of termites are working to damage your property. In case of termites, prevention is always better than cure. It is interesting, if your neighbor is doing anti-termite treatment, the termites will start moving towards new untreated zones, which may be your house.

Speaking as the chief guest Forest Survey of India director general Dr Anmol Kumar appreciated the initiative jointly undertaken by the two bodies FRI and PMA for addressing the need of pest management in houses, offices and buildings in changing scenario.

Addressing the gathering on the occasion the FRI director Savita said that the institute's Forest Entomology Division is working on important Entomological aspects, since its inception. Forest Entomology Division has made major contribution on Termites and their control measures. She added that, National Forest Insect Collection (NFIC), at Forest Entomology Division, has the richest collection on Forest Insects in India. This collection has about 3 lakh insect specimens with 18, 000 authentically identified species including 1900 Types. NFIC has also the wet collection with 855 species of Isoptera (Termites). NFIC has been fully digitized and detailed information on all species are available in database. She further claimed that Forest Entomology Museum is also a unique collection of 3,000 exhibits, representing different groups of insects and their damaging patterns.

A big model of termite Queen and termite mound are the exhibits, which draw the attention of visitors. This museum is a great source of learning for naturalists, researchers and trainees. Shestressed the need for more such programmes on regular basis.

Speaking on the occasion, the PMA president Dr Sarang Savalekar said that PMA is conducting training and educational programmes all over the country jointly with agricultural universities as well as government organisations for up gradation of knowledge and information on pest management. He further expressed his desire to conduct more such programmes with FRI on regular basis. Senior scientist Dr NSK Harsh proposed the vote of thanks on the occasion.

The Pioneer 27-02-16

दैनिक जागरण 27/2/16

मिट्टी की ट्यूब बनाकर घरों में घुसते हैं दीमक

◆ एफआरआइ में शुरू किया गया दीमक नियंत्रण व काष्ठ परिरक्षण कार्यक्रम

जागरण संवाददाता, देहरादून: दीमक जमीन पर मिट्टी की एक ट्यूब बनाते हुए घरों में प्रवेश करते है। दीमक की ये ट्यूब घरो की दीवार या लकड़ी की किसी वस्तु पर बनती दिखे तो तुरंत उपचार शुरू कर देना चाहिए। दीमक का प्रवेश तब भी संभव है, जब पड़ोस के किसी घर में दीमक का उपचार किया जा रहा है। वैसे दीमक के मामले में उपचार से बेहतर निवारण के उपाय करना है ताकि दीमक की घुसपैठ न हो पाए। यह बात वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में आयोजित दीमक नियंत्रण व काष्ठ परिरक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के वन कीट विज्ञान प्रभाग के वैज्ञानिक मो. यूसुफ ने कही।

शुक्रवार को पेस्ट मैनेजमेंट संस्थान के सहयोग से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय वन सर्वेक्षण के महानिदेशक डॉ. अनमोल कुमार ने किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रशिक्षण के माध्यम से औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधियो व शोधार्थियों को लाभ प्राप्त होगा। एफआरआइ की निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट संग्रहालय में करीब तीन लाख कीट नमूने रखे गए है। इनमें 18 हजार की प्रमाणिक रूप से विशेषज्ञो ने पहचान भी की है। दीमक की बात करें तो करीब 855 प्रजातियों के नमूने संग्रहित किए गए है। साथ ही कीटों का विस्तृत डाटाबेस भी तैयार किया गया है। कीट व दीमक नियंत्रण में यह जानकारी बेहद काम आती है। इस अवसर पर पेस्ट मैनेजमेंट के अध्यक्ष डॉ. सारंग सावलेकर, एफआरआइ के समूह समन्वय डॉ. एनएसके हर्श, डॉ. आरके ठाकुर उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 27-02-16